सत्संग की महिमा

एक है गंगा की महिमा और एक है सत्संग की महिमा। गंगा की महिमा के लिये एक कवि ने लिखा - 'दर्शन, मज्जन, पान त्रिविध भय दूर मिटावत।' इसका अर्थ यह हुआ कि गंगा का दर्शन मात्र करने से तीन प्रकार के जो दुःख हैं वे दूर होते हैं। वे तीन प्रकार के दुःख हैं आधिदैविक, आधिभौतिक, आध्यात्मिक। इस विषय पर पहले भी कुछ कहा जा चुका है। तो दर्शन, मज्जन, पान इसमें तीन बातें कही गयी। गंगा का दर्शन करने से और मज्जन-स्नान करने से, पान-यानि गंगा जल पीने से तीनों प्रकार के जो दुःख हैं ये नहीं रहते। अब बात यह है कि आधिदैविक, आधिभौतिक, आध्यात्मिक ये क्या कष्ट हैं और ये किस प्रकार के रोग हैं ? तो आधिदैविक का मतलब है कि जब किसी देवता के कोप के कारण कोई विपत्ति आती है तो उसको कहते हैं आधिदैविक।

ये भारतवर्ष है, इसकी कुछ विशेषता है। देवता को भी मानते हैं यहाँ के लोग और भगवान के अवतार को

भी मानते हैं। इसलिये यह कहा कि कोई देवता अप्रसन्न हो जाये तो मनुष्य को कष्ट होता है, यह हुआ आधिदैविक दु:ख। आधिभौतिक - सांसारिक जैसे आप ये समझें कि वृष्टि नहीं हुई, खेती उजड़ गई, जल गई - ये भौतिक कष्ट हैं। जैसे, मान लें कि अभी आपको साग-सब्जी की जरुरत है, केरोसिन तेल की जरूरत है, नहीं मिलता है इसका कष्ट हो गया, यह है आधिभौतिक कष्ट। कोई वस्तु जो संसार में पैदा होती है और उसे आप प्राप्त नहीं कर पाते, लोगों की चालाकी के कारण धूर्तता के कारण, दुष्टामि के कारण या किसी और तरह से भी तो ये हुआ आधिभौतिक। अभी फिलहाल ये इन्कम टैक्स आदि का जो झमेला चल रहा है यह भी आधिभौतिक है, दैविक नहीं। तीसरा क्या है ? आध्यात्मिक यानि आत्मा से सम्बन्ध रखने वाला भाव। आप शान्त रहना चाहते हैं लेकिन आपका मन शान्त नहीं। मन शान्त नहीं रहने से आपको आत्मदर्शन नहीं हो पाता। मन में एक बेचैनी रहती है कि ये शान्ति क्यों नहीं मिलती। शान्ति इसलिये नहीं मिलती कि आपने आत्मा का चिन्तन नहीं किया। अब भी लोग देव दर्शन करके देवता का चिन्तन करते हैं लेकिन आत्म चिन्तन नहीं करते। देव दर्शन करके कैसे ? जैसे हनुमान जी के मन्दिर में हम गये। हमने हनुमान जी का दर्शन किया प्रतिमा के रूप में और उसी को हम यूँ देखना चाहते हैं कि हनुमान जी हमको यूँ ही दिखाई दें। हम सत्यनारायण जी की, लक्ष्मी नारायण

जी की, वैकुण्ठ नाथ जी की या अन्य किसी की भी मूर्ति देखें और हम यह चाहें कि भई, ये हमको दिखाई दें तो यह तो हुआ कि देवता तक ही रहे आप। और आत्मा ? आत्मा तो आपके पास है। जब तक आपको आत्मज्ञान नहीं होगा तब तक आपको प्रतिमा की पूजा करते-करते ही जिन्दगी बितानी पड़ेगी। जब आप अपने आत्मदेव को पहचान पायेंगे, उस समय तब क्या होगा ? उस समय आपको कोई तकलीफ नहीं होगी।

आत्मदेव कौन है ? उसका क्या रूप है ? बात यह है कि अरूपी का कोई रूप नहीं होता और जब रूप होगा तब वह नकल होगी, असल नहीं। जैसे, आप प्रतिमा देखते हैं तो ये तो प्रतिमा है, भगवान नहीं। भगवान की प्रतिमा है। जैसे, एक आप है और एक आपकी तस्वीर है। तो कोई तस्वीर को ही कहे कि आप हैं, तो ये तो आप नहीं, आपकी तस्वीर है। इसी तरह से यह जो देव मन्दिर आप देखते हैं ये तो उन देवताओं की मूर्ति हैं। देवताओं को तो आपको रिझाना होगा भाव से, विचार से, प्रार्थना से, उपवास से, जप से, तप से अनेक प्रकार के साधन हैं। इन सबसे तो ये तीन प्रकार के दुःख बतलाये आपको आधिदैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक। इसमें ये आध्यात्मिक दुःख को तो बहुत कम लोग जान पाते हैं। मन में बेचैनी तो है पर क्यों बेचैनी है, इसका पता नहीं। उस बेचैनी को भी भीतर की बेचैनी को भी बाहर की वस्तुओं में, बाहर के

मनुष्यों में लोग खोजते हैं। अपने भीतर वे यह नहीं सोचते कि मैंने चिन्ता करके ये बेचैनी पैदा ही है। ये बेचैनी थी नहीं। मैं बैठा हुआ हूँ और मेरा लड़का बाहर गया हुआ है। कुछ देर हो गई, कोई कारण रहा होगा। उस कारण को न समझ करके मैं बेचैन हो गया। तो ये बेचैनी तो मैंने मोल ले ली अपनेआप। देर हो गयी, आने पर पूछ लेंगे कि भई, क्यों देर हो गई। लेकिन बेचैनी क्यों ? हर काम में आप देखेंगे कि आप स्वयं पैदा करते हैं चिन्ता, क्रोध, काम, द्वेष, ईर्ष्या आदि।

आप कहते हैं कि अमूक आदमी हमको देख करके हँसता है, हमारा अपमान करता है। इससे आपके दिल में दुःख होता है। आप क्रोध में उसको उलटी-सीधी बात भी कहते हैं। अच्छा, इसको आप ऐसे समझो कि कोई देखकर हमको हँसता ही तो है, रोता तो नहीं है। चलो हँसने दो, हमको तो ध्यान नहीं देना है उसकी हँसी पर। तो फिर आपके दिल में शान्ति आयेगी, चिन्ता नहीं आयेगी। आप देखते हैं उसकी तरफ कि वह हँसता है, इसलिये वह हँसता है। जब आप देखना छोड़ देंगे तो उसकी हँसी गायब हो जायेगी। बहुत सी चीजें तो ऐसी हैं जो आपके कारण होती हैं। आप झट से उसके साथ सम्बन्ध स्थापित कर लेते हैं। ये आदमी ऐसा क्यों है ? अरे, है वह जैसा है अपना देखेगा बाबा। तुमको क्या चिन्ता ? तुम सतर्क हो करके रहो, सचेत हो करके रहो। लेकिन सचेत हो करके रहना नहीं है

और सोचते हैं कि ये आदमी तो बड़ा खराब है। ऐसी बहुत सी बातें हैं जिससे कि आप चिन्ता को अपने दिल में, अपने घर में बसा कर रखते हैं। ये बात जो कही आप से गंगा की महिमा के बारे में जिसमें कि तीन प्रकार के जो दुःख हैं वे कैसे दूर हो यह बात आपको बताई गई थी।

यथार्थ में बात यह है कि दर्शन मात्र से ही पवित्रता का भाव यदि आ जाये तो यह समझो कि आपका दर्शन करना सफल। आप देव दर्शन करो, गंगा दर्शन करो, सतगुरु दर्शन करो किसी का भी दर्शन करो। दर्शन करने के साथ-साथ जब आपके मन में प्रसन्नता का भाव आ जाये तब आप यह समझो कि आपका दर्शन करना सफल हुआ। चूँकि गंगा तरल है इसलिये उसमें स्नान भी किया जा सकता है, उसका जल भी पान किया जा सकता है किन्तु भगवान तो तरल नहीं। तब, तो वह जो पान करने की बात कहते हैं ना, वह क्या है ? तो चरणामृत पीया जाता है भगवान का, यही पान करना है उनका। फिर आप कहेंगे कि स्नान करना क्या है ? स्नान तो आप अपने विचारों से करेंगे। शरीर से स्नान करते-करते तो बहुत युग बीत गये। उम्र के हिसाब से देख लो तो बारह वर्ष का एक युग होता है। तो जिसकी जितनी उम्र है वो उसी हिसाब से सोच ले कि मैं छत्तीस बरस का हुआ तो तीन युग बीत गया। अभी तक मुझे न भगवान का दर्शन हुआ, न सतगुरु का दर्शन हुआ, न देव दर्शन हुआ। क्यों ?

इसलिये नहीं हुआ कि मैं पूरा विश्वास नहीं कर पाया।

पत्थर में मनुष्य भगवान देखता है। मनुष्य तो जो देखता है वह अवगुण ही पहले देखता है। तो ये जो अवगुण मनुष्य देखता है तो फिर उसको (गुरु को या अन्य आराध्य को) मनुष्य नहीं समझ पाता। हँसी के लिये मैं आपको एक बात कहता हूँ - मैं बैठा हूँ और मेरे गले में ये ऐसा बँधा हुआ गुलबन्द है। इससे दूसरा आदमी ये सोचेगा कि बड़ा जोरदार आदमी है। देखो गले में टाई बाँध रखी है। उसको तो पता नहीं कि मुझे सर्दी लगी हुई है और गले की रक्षा के लिये मैंने ये छोटा गुलबन्द गले में डाल रखा है। तो मेरी तकलीफ को तो वह जानता नहीं और मुझे देख करके वह विचार कर लेता है कि गले में तो उसने टाई बाँध रखी है, बड़े ठाट से पान खाता है, ऐसा करता है, वैसा करता है, बस इसी उधेड़ बुन में वह चलता चला जाता है। वह न मेरी वाणी को सुनता है, न मेरे भाव को सुनता है, न मेरी विचार धारा कैसी है उसकी तरफ कुछ देखता है। अगर मेरी जीवित अवस्था में ही कोई पत्थर बनाकर उसे वह देखते या जैसे समझो आप सत्संग सदन में एक चित्र बना हुआ है वहाँ जा करके खड़ा होकर देखें तो न वहाँ टाई दिखलाई देगी, न पान खाता हुआ दिखलाई देगा, न कुछ और दिखलाई देगा। श्रद्धा-भक्ति होगी तो श्रद्धा-भक्ति से देखेगा, तो उसे श्रद्धा-भक्ति मिलेगी। लेकिन क्यूँकि शरीर है तो शरीर में

मनुष्य अवगुण देखता है। बात इतनी ही है कि अवगुण से भरा हुआ तो मनुष्य का शरीर होता ही है। उसमें भी आप केवल अवगुण ही खोजते हैं तो गुण की प्राप्ति फिर आपको कहाँ होगी ? अन्धे को यदि आप देखना चाहो तो बेचारा अन्धा तो है ही। तो फिर आप उसमें और क्या देखना चाहते हैं ? आपको तो यह समझना है कि ये तो अन्धा ही है।

भगवान तो अन्धा नहीं लेकिन यह भी तो आपको विश्वास होना चाहिये ना कि भई, भगवान अन्धा नहीं। कहावत है - 'देर है, अन्धेर नहीं'। यहाँ एक छोटी सी कहानी सुना दूँ आपको। एक जाट था और एक जाटनी थी। जाटनी के कोई सन्तान नहीं। किसी ने उसको कह दिया कि शनिवार के दिन यदि तू सात छाँग जला करके आये तो तेरे सन्तान हो सकती है। छाँग आप जानते हैं न, छाया हुआ रहता है देशों में। यहाँ तो खपरैल बिछाया जाता है और देशों में पानी और पुआल लेकर के छाते हैं। उसमें जरा सी आग लगने से ही बहुत जोर से आग जलने लगती है। उस जाटनी ने शनिवार के दिन सात घर जला दिये और फिर क्या हुआ कि एक-एक करके उसके पाँच लड़के हो गये। जाट कहने लगा - भगवान के घर में देर है अन्धेर नहीं। जाटनी तो खुश थी कि पाँच लड़के हो गये, लेकिन जाट कहता है कि भगवान के घर देर है, अन्धेर नहीं। जाटनी इस बात को सुनकर बहुत नाराज

होती। मेरा पति, और यह कहता है कि भगवान के घर में देर है, अन्धेर नहीं। एक दिन क्या होता है कि कच्चा घर था। एक साँप निकल आया, पाँचों को काट गया। पाँचों लड़के मर गये। अब वह जाट कहता है कि भगवान के घर में देर नहीं, अन्धेर भी नहीं। जाटनी को कहता है - अरी भली मानस ! रोती क्यों है ? सात घर जला कर आयी, सुख से रह सकेगी ? कभी कुछ सोचा दूसरों का घर जलाने से पहले ? अब तेरा घर जल गया ना ? अब तेरा घर जला कि नहीं जला ? अरे, ये तेरा घर जला तो इस रोग को इस दुःख को तू सहन नहीं कर सकेगी और जिनका घर तूने जलाया था उन्होंने तो फिर छाँग डाल ली है। ये ही वह कहावत की बात है कि "देर है, अन्धेर नहीं।" किया हुआ भोगना पड़ता है, जो तुम्हारे घर के साथ हुआ उसके लिये यह कहावत है - "भगवान के घर देर नहीं, अन्धेर भी नहीं।"

बात थी गंगा दर्शन की, गंगा में स्नान करना। स्नान करना माने प्रभु के भाव में अपनेआप को रंग लेना, ये है स्नान करना। और प्रसाद आदि, चरणामृत आदि पान करना ये है गंगा का पान करने की तरह। देखो, इतनी वार्ता में हमने आपको गंगा दर्शन की बात बतलाई, गंगा की महिमा बताई। अब सत्संग की महिमा देखें आप। सत्संग की महिमा यह है, रामायण का एक दोहा है - "तात, स्वर्ग, अपवर्ग सुख धरिय तुला एक अंग। तूल न

ताहि सकल मिली, जो सुख लव सत्संग।'' इसका अर्थ यह है - हे तात् ! स्वर्ग-अपवर्ग का जो सुख है, स्वर्ग और मोक्ष का जो सुख है उसको तराजू के एक पलड़े में रख दो और दूसरे पलड़े में एक लव मात्र, एक क्षण मात्र का जो सत्संग है उसे आप रख दो। तो जो क्षण मात्र का सत्संग है वह वजनी है, वह भारी है और यह स्वर्ग और मुक्ति का जो सुख है वह उसकी तुलना में हलका है। लोग कहेंगे कि ये उलटी बात कैसे कह दी ? बात उलटी नहीं। संग प्राप्त हुआ कैसे ? सत्संग से। इसीलिये सत्संग बड़ा। मोक्ष की प्राप्ति कैसे हुई, सत्संग से। इसीलिये सत्संग बड़ा। एक लव मात्र सत्संग क्यों कहा ? आप कहेंगे कि हम तो घण्टा भर सत्संग में बैठते हैं, दो घण्टा बैठते हैं और लिखने वाले ने लिख दिया, यह कह दिया कि एक क्षण मात्र के सत्संग से मनुष्य जो है वह सुख पाता है जो सुख कि स्वर्ग में नहीं, मोक्ष में नहीं। यह क्या बात ? हम तो कई घण्टा बैठ चुके हैं।

बात इसमें एक और है, वह यह है कि ये तो आप सत्संग के लिये बैठते हैं। सत के साथ एक क्षण मात्र का भी आपका सम्बन्ध हो जाये, सत्य के साथ, ये तो आप बैठे हो सत्संग में ये तो एक अलग चीज है। जो सत्य शक्ति सम्पन्न है उसके साथ एक लव मात्र, एक क्षण के लिये भी उस बेतार वाले से आपका तार लग जाये तो क्या होगा ? तो लगातार उसकी भावना काम करेगी। शब्द है

लगातार। क्या मतलब ? लगा, तार। यदि तार लग गया तो लगातार। तो फिर अपनेआप होता रहेगा, फिर आपको कुछ नहीं करना है। जब तक तार लगता नहीं है आपका उसके साथ तब तक आपको सत्संग भी करना है और भी बहुत सी बातें करनी हैं। लेकिन जैसे ही तार लगा नहीं कि बस तार लगा और लगातार अपनेआप हो जायेगा। एक तो यह मतलब और एक यह कि ये जीवन का जो तार है ये किसके हाथ में ? ये जीवन का तार जो है करतार के हाथ में है। करतार भगवान को कहते हैं। कर सकते हैं हाथ, तार जो है वह जीवन का। तो करतार का मतलब जिसके हाथ में हमारे जीवन का तार है और जो हमें जैसे नचाता, खिलाता, दिखाता वह जो भगवान है वह करतार है। और हम ? हम तो पुतली हैं काठ की। नचाता है, नाचते है। सत्संग करवाता है, सत्संग करते हैं। ये उसकी शक्ति है तो हमें बोलने के लिये भावना देती, हमसे बुलवाती, आपसे सुनवाती, आपके हृदय में बातें बैठाती, ये सब उसकी शक्ति है, वह करतार है। करतार है इसीलिये बेड़ा पार है।

बेड़ा पार किसको कहते हैं ? देखो, बहुत से जहाज जो होते हैं उनको एक साथ में जोड़ दिया जाता है, वह जहाज का बेड़ा कहलाता है। यानि संसार रूपी समुद्र में जो जहाज है जीवन का या अपना सब खेल का वो है बेड़ा। 'जैसे उड़ी जहाज को पंक्षी, फिर जहाज पर आवे।'

चला जा रहा है कारवाँ, चला जा रहा है। वार कुछ, क्योंकि ये कारवाँ है। कारवाँ का मतलब क्या हुआ ? कारवाँ होता है, लगातार जैसे ऊँटों की पंक्ति चली जा रही है या कुछ और एक साथ चल रहा है जो उनको कारवाँ कहते है उर्दू में। तो कारवाँ का क्या मतलब हुआ ? कर भई, कुछ ऐसा कार्य कर, कुछ ऐसा काम कर कि वाह-वाह, आनन्द ही आनन्द रहे।

जब देवघर में बाबा की सत्संग हो रही थी, हूबहू जैसे मालूम हो रहा था कि कोई डमरू बजा रहा हो, इधर से आवाज गुरु, उधर से आवाज गुरु। डमरु तो देखा होगा आपने, दो तरफ ऐसे लगा रहता है। आप गुरु की महिमा क्या जानें। ये तो केवल बाहर का डमरु बजा रहे हैं आप। एक समाज है, एक जीता जागता समाज है। वह क्या कहता है - वाहे गुरु, वाहे गुरु, वाहे गुरु जी। इतना ऊँचा भाव है उसका। वाहे गुरु, हे गुरु ! मैं क्या तुम्हारी प्रशंसा करूँ। वाहे गुरु जी सतनाम। सतनाम - प्रभु का नाम जो है सतनाम। हे गुरु ! ये सतनाम का पौधा तूने ही लगाया है मेरे हृदय में। इसलिये वाहे गुरु। हे गुरु ! मैं तुम्हारी क्या प्रशंसा करूँ, मैं प्रशंसा के लायक नहीं। तब तुम जान पाओगे कि गुरु क्या है। बात यह है कि जो जिस चीज को जानता नहीं, आडम्बरी है केवल बातें बनाता है, भीतर में उसके कोई भाव नहीं, वह क्या जाने कि वाहे गुरु क्या है। यदि हम किसी से उपकृत नहीं होंगे तो हमारे भीतर

कृतज्ञता आयेगी कैसे। उसने हमारा उपकार किया है। हम कैसे जान पायेंगे।

हम दुनिया में ऐसे ही बहते जा रहे थे। उसने हमें एक राह बतलाई। राह बतलाई ही नहीं, हाथ पकड़ करके हमको उस राह में चलाया और चलाते समय हमारा उत्साह बढ़ाया और कहा कि दुनिया तुझे उलटी-सीधी बातें कहेगी, लेकिन तुझे तो चलना है, आगे बढ़ना है, कुछ बनना है। तेरे जीवन का कारवाँ आगे बढ़ता चला जायेगा और वह जाते-जाते जब मंजिले मकसूद पहुँचता है तब क्या कहता है ? वाहे गुरु । हे तुरु ! मैं तुम्हें क्या कहूँ, क्या शाबासी दूँ। तुम तो बहुत बड़े हो। यही कहता हूँ कि वाहे गुरु, वाहे गुरु, वाहे गुरु जी। तीन बार कहने का मतलब पक्का। किसी चीज को तीन बार कहो यानि बार-बार कह दी कि वह बात पक्की बात। वाहे गुरु, वाहे गुरु, वाहे गुरु तीन बार बोले, एक बार और कह देते, चार बना देते, पाँच बना देते। नहीं तीन का ही हिसाब है, तीन का ही महत्व है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश; तमोगुण, रजोगुण, सतोगुण; तीन लोक हैं - पाताल लोक, पृथ्वी लोक, स्वर्गलोक - ये तीन-तीन का ही हिसाब है। इसीलिये तीनों लोकों में वह कहता है - वाहे गुरु, वाहे गुरु, वाहे गुरु। यही नहीं कि इसी मृत्यु लोक में ही वो अपने गुरु की महिमा गाता है, वो तो पाताल लोक में भी जायेगा तो वाहे गुरु और मृत्यु लोक में भी जायेगा तो भी बोलेगा -

वाहे गुरु और स्वर्ग में भी जायेगा तो भी बोलेगा - वाहे गुरु क्योंकि उनकी कृपा से ही मैं यहाँ आया। इसलिये सत्संग की महिमा बहुत बड़ी है। बैठे-बैठे जब सत्संग हो जाये, प्रभु का नाम अपनेआप मधुर स्वर में गूंजने लगे तो फिर चिन्ता, घृणा, ईर्ष्या, द्वेष आदि की भावना मनुष्य में नहीं रहती। बात बहुत सी कही गयी आपको। आप इन बातों को हृदय में ग्रहण करो। बस।